# शाहीनबाग आंदोलन से कट्टरपंथी ज्यादा परेशान

## महिलाओं ने मौलवियों से साफ शब्दों में कहा - नहीं खत्म करेंगे आंदोलन

**मजदूर मोर्चा ब्यूरो**

**नई दिल्ली:** देश भर में शाहीनबाग जैसे आंदोलन से सबसे ज्यादा कट्टरपंथी परेशान हैं। आरएसएस, भाजपा समेत तमाम फर्जी राष्ट्रवादियों ने सीएए, एनआरसी, एनपीआर के खिलाफ शुरू हुए आंदोलन को फौरन पाकिस्तान परस्त लोगों का आंदोलन कहकर इसे खारिज कर दिया लेकिन इनके झूठे राष्ट्रवाद से तब नकाब उतर गया, जब हर धर्म के लोग हाथों में तिरंगा लेकर इस आंदोलन में कूद पड़े। परेशान मोदी सरकार फिर उन्हीं मौलवियों की शरण में पहुंची और उनसे अपील कराई की आंदोलन को अब खत्म कर दिया जाए। अब तक कौम को हांक रहे मौलवियों ने मोदी सरकार के सुर में सुर मिलाते हुए अपील जारी कर दी कि मुसलमान अब शाहीनबाग आंदोलन वापस ले लें। लेकिन मौलवियों ने चंद घंटे में तब घुटने टेक दिए जब देशभर से मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि हम इस आंदोलन को मौलवियों के कहने पर हरगिज नहीं वापस लेने वाले। दरअसल, सरकार को दिल्ली के शाहीनबाग के अलावा लखनऊ घंटाघर और देवबंद में महिलाओं के आंदोलन खटक रहे हैं।

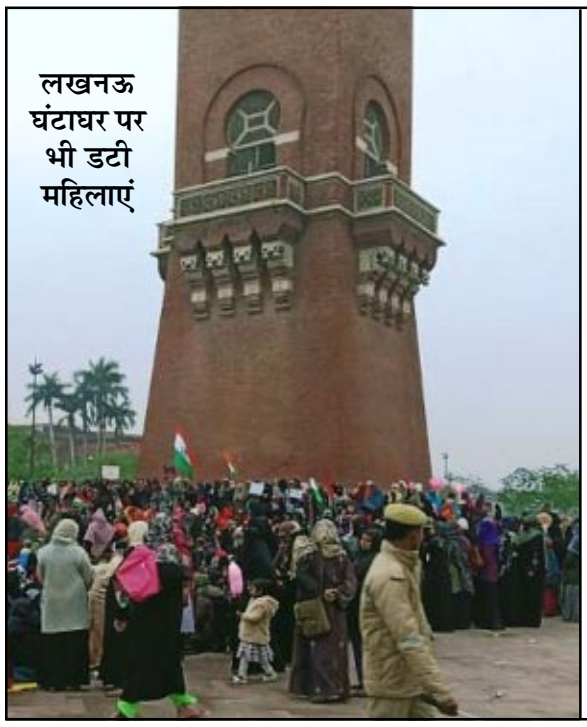

### दारुल उलूम देवबंद की अपील

देवबंद में गुरुवार को सरकार के इशारे पर डीएम के नेतृत्व में एक टीम ने मदरसा दारुल उलूम देवबंद में व्यवस्थापकों से बातचीत की थी। इसके बाद महिलाओं का धरना प्रदर्शन खत्म करने की अपील की गई थी। शुक्रवार को देवबंद का वह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा जिसमें वहां के उलेमा शाहीन बाग की महिलाओं से धरना खत्म करने की अपील कर रहे हैं। गौरतलब है कि देवबंद सुन्नी विचारधारा के मुसलमानों का बहुत बड़ा केंद्र है और इसकी बात मुसलमान गौर से सुनते हैं। लेकिन इस वीडियो के सामने आते ही न सिर्फ दिल्ली के शाहीनबाग की बल्कि देवबंद, लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर में बैठी महिलाओं ने फौरन इसे आंदोलन के खिलाफ साजिश करार दिया। आंदोलन से जुड़ी हुई शबाना कुरैशी ने दो टूक कहा, यह कोई मजहबी लड़ाई नहीं है जो हम उनकी बात मान लें। यह लड़ाई संविधन के बचाने के लिए है और जब तक सीएए और प्रस्तावित एनआरसी वापस नहीं होते, तब तक यह लड़ाई जारी रहेगी।

देवबंद जहां से इस वीडियो को जारी किया गया था, वहां तो हंगामा हो गया। देवबंद का घटनाक्रम काफी दिलचस्प है। गुरुवार को सरकार की तरफ से बनाई गई एक कमेटी महिलाओं को समझाने और धरना खत्म करने की अपील करने के लिए उनसे बातचीत करने गई थी। कमेटी के लोगों ने महिलाओं से बातचीत शुरु की ही थी कि पंडाल में धरने पर बैठी सैकड़ों महिलाओं ने जोरदार तरीके से -गो बैक- और देवबंद के नेता शर्म करो के नारे लगाने शुरु कर दिए। महिलाओं ने धरना खत्म करने से साफ इनकार कर दिया। महिलाओं ने कमेटी के सदस्यों पर चूड़ियों की बरसात कर दी थी।

हालांकि महिलाओं की तरफ से इरम उस्मानी, आमना रूशी, सलमा अहसन और फौजिया परवीन ने कमेटी में शामिल चेयरमैन जियाउद्दीन अंसारी, पूर्व विधायक मुआविया अली, मौलाना मुजम्मिल अली कासमी, बदर काजमी आदि से बातचीत की ही थी कि वहां मौजूद सैकड़ों महिलाएं नारेबाजी करते हुए पंडाल से निकल कर उस जगह पहुंच गईं जहां कमेटी के लोग महिलाओं से बात कर रहे थे। इस माहौल को देखते हुए कमेटी ने ईदगाह मैदान से बाहर जाना ही मुनासिब समझा और बातचीत बीच में ही रह गई।

शुक्रवार को डीएम आलोक कुमार पांडे और एसएसपी दिनेश कुमार फिर देवबंद पहुंचे और सरकारी गेस्ट हाउस में मदरसे के व्यवस्थापकों के अलावा दारुल उलूम देवबंद के वाइस चांसलर मुफ्ती अबुल कासिम नोमानी, डिप्टी वाइस चांसलर मौलाना अब्दुल खालिक मदरासी, दारुल उलूम वक्फ के उप सचिव मौलाना शकीब कासमी, पूर्व विधायक मुआविया अली, नगरपालिका चेयरमैन जियाउद्दीन अंसारी, जामिया तिब्बिया कालेज के प्रशासक डॉक्टर अख्तर सईद, जामिया इमाम मोहम्मद अनवर शाह आदि से मुलाकात की। दोनों अफसरों ने इन लोगों से कहा कि सरकार ने एनआरसी पर संसद में लिखित में जवाब दे दिया है जिसमें कहा गया है कि एनआरसी फिलहाल लाने की बात नहीं है। ऐसे में देवबंद में महिलाओं को अपना धरना खत्म कर देना चाहिए। लेकिन प्रशासन की सारी कोशिशें नाकाम रहीं क्योंकि महिलाओं ने अपना धरना खत्म करने से साफ इनकार कर दिया है। महिला आंदोलनकारी आसिफा ने कहा कि मोदी सरकार अब उन मुस्लिम महिलाओं को तलाश करे जिनके फायदे के लिए वह तीन तलाक के खिलाफ कानून लेकर आई थी। आखिर वो महिलाएं सरकार की तरफ से सामने क्यों नहीं आतीं। सच तो यह है कि यह सरकार मुसलमानों को बदनाम करने के लिए रोजाना कोई न कोई हथकंडा अपनाती है। हमारे आंदोलन ने उसकी पोल खोल दी है कि वह मुस्लिम महिलाओं की कितनी हमदर्द है।

मुत्ताहिदा खवातीन समिति की सलमा अहसान ने कहा, महिलाओं की तकलीफों को दूर करने के उद्देश्य से कुछ ही साल पहले समिति को बनाया गया है, लेकिन अब हम सीएए के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि हमारे इस आंदोलन को हर धर्म के लोगों का भी सहयोग मिल रहा है। अहसान ने कहा कि समिति ने यह फैसला किया है कि हमारे इस मंच को किसी भी राजनीतिक दल के साथ साझा नहीं किया जाएगा, लेकिन अगर वे हमारा साथ देते हैं तो उनका स्वागत है। उन्होंने कहा, यह आंदोलन सिर्फ मुस्लिमों तक सीमित नहीं है। हमने सभी धर्मों की महिलाओं से अपील की है कि वे हमारा साथ दें।

**सिर्फ महिलाएं ही नहीं, बल्कि स्कूल जाने वाली लड़कियां भी इस प्रदर्शन में शामिल होने के लिए समय निकाल रही हैं। दसवीं कक्षा की एक छात्रा जुहा हुसैन ने कहा, यह लड़ाई हमारे इंसाफ के लिए है और इसीलिए मुझे पढ़ाई और प्रदर्शन में संतुलन बनाने की जरूरत है, ताकि दोनों जगहों पर अपनी मौजूदगी दर्ज करा सकूं।**

### लखनऊ का घंटाघर आंदोलन

लखनऊ के घंटाघर पर महिलाओं का आदोलन दिल्ली के शाहीनबाग के आंदोलन को एक महीना पूरा होने पर 17 जनवरी को शुरु किया गया। इस आंदोलन को शुरू करने में पुराने लखनऊ के उस परिवार की भूमिका सामने आई, जो चुपचाप अपने ढंग से सिर्फ अपने समुदाय में धार्मिक सुधारों को लेकर सक्रिय रहता था। यह परिवार है मौलाना कल्बे सादिक का, जिनके पुरखे देश की आजादी की लड़ाई में भी शामिल रहे। व्हील चेयर पर बैठकर मौलाना कल्बे सादिक खुद घंटाघर पहुंचे और महिला आंदोलनकारियों की हौसलाअफजाई की। उर्दू के मशहूर शायर मुनव्वर राणा की बेटी और परिवार की अन्य महिलाएं भी आंदोलन में कूद पड़ीं। सामाजिक कार्यकर्ता सदफ जाफर ने भी मोर्चा संभाल लिया। लेकिन अचानक 19 जनवरी को योगी सरकार की पुलिस गुंडागर्दी पर उतर आई और उसने यहां की बिजली काट दी, मैदान में पानी भर दिया, महिलाएं जो खाने-पीने का सामान लेकर आई थीं उन सामानों को लूट लिया गया। योगी सरकार की इस मूर्खता ने बड़ा काम यह किया कि लखनऊ शहर के तमाम एनजीओ और सामाजिक-धार्मिक संगठनों के लोग वहां जा पहुंचे। 19 जनवरी को ही यह तादाद हजारों में पहुंच गई। लखनऊ के सिख पुरुष और महिलाएं घंटाघर पर रात में ही खाना और पानी लेकर पहुंच गए। अचानक ही यह आंदोलन सर्व धर्म संभाव का आंदोलन बन गया। लखनऊ का आंदोलन राजनीतिक दलों के लिए भी बड़ा संदेश लेकर आया। जिस आंदोलन को मुस्लिम महिलाओं ने एक परिवार की रहनुमाई में शुरू किया था वह अब जन आंदोलन बन गया है।

### अब हम खुद अपने रहबर हैं

ज्ञानपीठ और साहित्य अकादमी से सम्मानित हिंदी की बड़ी उपन्यासकार नासिरा शर्मा ने हिंदीवाणी साइट पर शाहीनबाग को लेकर एक लंबा लेख साझा किया है। महिला होने के नाते उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के जरिए शाहीनबाग को देखा है। उनकी ये लाइनें बताती हैं कि महिलाएं किस तरह शाहीनबाग जैसे आंदोलन को लेकर इतना गंभीर क्यों हैं। वह लिखती हैं -

जवान माएं गोद में दूध पीते बच्चों को लिए बैठी थीं। कुछ दोशी ज़ाएं सामने से गुज़रीं जिनमें खुदा की वापसी की फ़रज़ाना भी खड़ी नज़र आई जो उन से कह रही थी "मैं तो जाहिल मुल्ला की दाढ़ी गुस्से में आकर कुतरना चाहती थी। मगर तुम लोगों ने तो कमाल कर डाला उन्हें सिरे से ही नकार दिया?" "करना पड़ा आपा वरना इन सब के चक्कर में तो हम एक सदी और पीछे चले जाते।" "अपने क़ानून को दूसरों के मुंह से सुनने से अच्छा है खुद से पढ़ना, समझना और अपने अधिकार के लिए लड़ना"

"वही तो किया आपा हमारी मां व नानी, दादी ने बिना किसी नेता के हम अब खुद अपने रहबर बन बैठे हैं।" वह हंसी ।

मुझे याद आया मैंने कहीं लिखा था 'इन्सान दो बार पैदा होता है। पहली बार अपनी मां की कोख से और दूसरी बार हालात की मार से।' आज महसूस हुआ जब मौत और ज़िन्दगी सामने आन खड़ी हो तो इन्सान जीने की तमन्ना करता है।

# कोरोना वायरस पर आयुष मंत्रालय ने जारी की अंधविश्वासी एडवाइजरी, कहा सिर पर हर्बल ऑयल लगाने से दूर होगी बीमारी

**आयुष विभाग द्वारा जारी एक एडवाइजरी के अनुसार कुछ हर्बल ऑयल ऐसे है, जिन्हें खोपड़ी पर लगाने से इस रोग से दूर रहा जा सकता है। अर्सेनिकम एल्बम 30 नामक होमियोपैथी की दवा से इस रोग से लड़ा जा सकता है....**

**महेंद्र पाण्डेय**

किसी की समस्या का अध्ययन किये बिना ही उसका हल खोज लेना हमारी सरकारों की विशेषता रही है। पूरी दुनिया में इस समय कोरोना वायरस की दवा पर अनुसंधान किया जा रहा है और टीके की खोज पर काम किया जा रहा है, लेकिन अभी तक कोई विशेष सफलता नहीं मिली है। इस बीच भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने बिना कोई अध्ययन किये ही यूनानी पद्धति, होमियोपैथी और आयुर्वेद में इसके इलाज के तरीके खोज लिए हैं और इस रोग से बचाव के भी।

आयुष विभाग द्वारा जारी एक एडवाइजरी के अनुसार कुछ हर्बल ऑयल ऐसे है, जिन्हें खोपड़ी पर लगाने से इस रोग से दूर रहा जा सकता है। अर्सेनिकम एल्बम 30 नामक होमियोपैथी की दवा से इस रोग से लड़ा जा सकता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार इसे तीन दिनों तक खाली पेट खाना है और यदि एक महीने बाद भी एहतियात के तौर पर फिर से यही प्रक्रिया दोहरानी है। इसके अतिरिक्त अपने आस-पास साफ-सफाई की बात भी कही गयी है। भारत सरकार से पहले दलाई लामा ने किसी मन्त्र के बारे में कहा था कि इसके जाप से कोरोना वायरस से लड़ने में मदद मिलेगी।

प्राचीन विद्याओं से भले ही कोई ठीक होता हो या ना होता हो लेकिन भारत सरकार समेत सभी आयुर्वेद, होमियोपैथ और यूनानी संस्थान ठण्ड से लेकर कैंसर और एड्स तक के इलाज का दावा करते हैं। आयुष मंत्रालय के अनुसार देश की दस प्रतिशत से अधिक जनसंख्या तो पूरी तरह होमियोपैथी पर निर्भर करती है।

आयुष मंत्रालय के लिए पीआईबी ने जो एडवाइजरी जारी की है, उसमें इस रोग के लिए 'रहस्यमय' शब्द का उपयोग किया गया है। आशचर्य यह है कि इस रहस्य का बिना वैज्ञानिक अध्ययन किये ही इसकी दावा भी खोज ली गयी। वैसे पीआईबी की जो 29 जनवरी की एडवाइजरी है, उसे किसी वैज्ञानिक ने तैयार नहीं किया होगा क्योंकि इसमें अधिकतर पौधों के जो बोटैनिकल नाम हैं वे गलत तरीके से लिखे गए हैं। इसमें यह भी लिखे गया है कि आप मास्क का उपयोग करें और किसी भी अंदेशे में नजदीकी हॉस्पिटल से शीघ्र संपर्क करें।

**एडवाइजरी के अनुसार कोरोना वायरस से ग्रस्त होने पर होमियोपैथी पद्धति में उपलब्ध दवाये-अयास्त्य हरित्याकी 5 ग्राम दिन में दो बार, शम्शामंज वटी 500 ग्राम दिन में दो बार, त्रिकतु और तुलसी का काढा पीयें और तिल के तेल को नाक में डालें।**

चीन के हुबई प्रांत की राजधानी वुहान से कोरोना वायरस की उत्पत्ति हुई और अब तक 24 देशों में इसके मामले मिले है। हमारे देश में भी दो मामलों की पुष्टि की जा चुकी है। पिछले शनिवार तक चीन में कुल 14380 मामले सामने आ चुके हैं और 304 लोग इससे मर चुके हैं। चीन के अतिरिक्त दुनिया में कुल 124 मामले सामने आ चुके हैं, जिसमें दो भारत में भी हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक चुनौती घोषित कर दिया है। इसकी शुरुवात खांसी, बुखार और सांस की समस्याओं से होती है फिर निमोनिया हो जाता है और अंत में शरीर के अंग धीरे-धीरे काम करना बंद कर देते है। जर्मनी के वैज्ञानिकों के अनुसार यदि कोरोना वायरस के लक्षण स्पष्ट नहीं हैं फिर भी वह व्यक्ति दूसरों में यह रोग फैलाने में सक्षम है।

आयुष मंत्रालय के दावे के बाद भी तथ्य यह है कि यह वायरस से फैलता है इसलिए इसपर सभी एंटीबायोटिक्स बेअसर है और फ्लू की दवाओं से इसका इलाज संभव नहीं है।